''स्वातंत्र्योत्तर यात्रा–साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध का सार

शोध–निर्देशक

प्रोफेसर महेन्द्रपाल शर्मा

शोधार्थी

अनिल कुमार

हिन्दी विभाग

मानविकी एवं भाषा संकाय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

नई दिल्ली – 110025

मई – 2005

शोध–सार

जब कोई साहित्यकार या संवेदनशील प्राणी यात्रा करते हुए अपनी अनुभूतियों को अपनी सृजनात्मक क्षमता के कारण रूप प्रदान करता है तो वह यात्रा–साहित्य की कोटि में गिना जाता है। यात्रा की परंपरा हमारे देश में प्राचीन काल से रही है लेकिन यात्रा का लिखित विवरण हमें भारतेन्दु–युग से पूर्व हस्तलिखित ग्रन्थों के रूप में मिलता है।

भारतेन्दु–युग से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक इस युग में सत्यदेव परिव्राजक और राहुल सांकृत्यायन सबसे प्रमुख यात्रा–वृत्त लेखक रहे और यात्रा साहित्य के दो आधार स्तंभ कहलाए। इन दोनों यात्रा लेखकों ने मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों रूप से यात्रा–साहित्य को समृद्ध किया। स्वतंत्रता–पूर्व युग में डा0 गदाधर सिंह, माधव प्रसाद मिश्र, बेणीशुक्ल, पं0 सूर्यनारायण व्यास, धीरेन्द्र वर्मा, लक्ष्मीनारायण टण्डन, सत्येन्द्र नारायण, गोपालराम गहमरी, केदाररूप राय, गंगलानन्द पुरी, कृपानाथ मिश्र आदि महत्वपूर्ण यात्रा–वृत्तकार हुए। स्वतंत्रता–पूर्व यात्रा–साहित्य स्थूल वर्णनात्मक और धार्मिक भावना से प्रेरित रहा लेकिन इस युग के अन्त तक यात्रा साहित्य शैली की विभिन्नता, सूक्ष्म वर्णनात्मकता, भाषा की लाक्षणिकता, संवेदना, अन्तरंगता आदि की ओर अग्रसर हो गया।

स्वातंत्र्योत्तर युग में विपुल यात्रा में यात्रा–साहित्य का प्रणयन हुआ है। इस युग में लेखकों की बढोतरी के साथ विविध विधा एवं क्षेत्रों से इनके जुड़े होने के कारण यात्रा–साहित्य में विविध विषय प्रतिपादन एंव शैली–शिल्प के नवीन प्रयोग मिलते हैं। इस युग के – भगवतशरण उपाध्याय, मोहन राकेश, रामवृक्षबेनीपुरी, यशपाल, विष्णुप्रभाकर, सेठ गोविन्द दास, अज्ञेय, दिनकर निर्मल वर्मा, काका कालेलकर, रामकुमार वर्मा, नगेन्द्र, राजेन्द्र अवस्थी, शंकर दयाल सिंह, प्रभाकर द्विवेदी, रामदरश मिश्र, लल्लन प्रसाद व्यास, कृष्ण नाथ, राज बुद्धिराजा, अजित कुमार, श्री

निधिसिद्धांतालंकार, विष्णुकान्त शास्त्री, डा0 कुमुद, प्रदीपपंत आदि अनेक प्रमुख यात्रा–लेखक रहे है।

इस युग का यात्रा–साहित्य अपने पूर्व युग की अपेक्षा साहित्यिक दृष्टि से श्रेष्ठ है। इसमें कलात्मकता, भावुकता, यात्रा–स्थलों के वर्णन, विवरण व मार्ग की घटनाओं के साथ–साथ लेखकों ने अपने विचार, प्रतिक्रिया, अनुभव, चिंतन, जीवनदर्शन व घटनाओं के विश्लेषण को प्रमुख रूप से उद्‌घाटित किया है।

यात्रा–साहित्य में प्रकृति–चित्रण करने वाले – श्री निधि सिद्धांतालंकार, विश्वमोहन तिवारी, हवलदार त्रिपाठी सहृदय, निर्मल वर्मा, प्रदीप जैन, मंगलेश डबराल, राम लाल वर्मा, विष्णु प्रभाकर, इन्दु जैन, प्रेम लाल भट्‌ट, सुगन चन्द मुक्तेश आदि प्रमुख लेखक रहे हैं। यात्रा–साहित्य में देश–विदेश की प्रकृति के मोहक एंव भयंकर दोनो रूपों का विविध रूप एंव शैलियों में चित्रण हुआ है। इसके साथ–साथ प्रकृति का मानवीकरण, समाज शास्त्रीय प्रभाव एंव इसके वैज्ञानिक रूप को भी यात्रा–लेखकों ने जगह–जगह प्रकट किया है।

यात्रा–साहित्य में इतिहास को प्रकट करने वाले – यशपाल, राजवल्लभ ओझा, दिनकर, श्रीकान्त वर्मा, अज्ञेय, श्याम सिंह 'शशि', पुष्पा भारती, उदयभानु हंस, रंजन कुमार सिंह, तिलक राज गोस्वामी, आदि प्रमुख लेखक रहे है। यात्रा–साहित्य में यात्रा–स्थलों के इतिहास को यात्रा–साहित्यकारों ने अपनी संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है और अनेकों तथ्य भी जुटाए गए है फिर भी अनेक जगहों पर पुर्णतः इतिहासकार की दृष्टि से भी इतिहास का वर्णन मिलता है।

यात्रा–साहित्य में सांस्कृतिक परिवेश को प्रमुखता से उजागर करने वाले–राजबुद्धिराजा, लल्लन प्रसाद व्यास, सोमदत्त बखौरी, कृष्णनाथ, प्रमोद चन्द शुक्ल, जयनारायण कौशिक, रमानाथ त्रिपाठी, अशोक अग्रवाल,

पद्मा सचदेव, शान्ति देवबाला, गोविन्द मिश्र आदि प्रमुख लेखक रहे है। यात्रा–लेखकों ने अपने यात्रा–स्थलों से जुड़े रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा, रीति–रिवाज, मान्यताओं, परम्पराओं, विश्वास, मनोरंजन के साधनों, गीत, संगीत, नृत्य, लोकगीत, मेलों, उत्सवों कथा, किंवदंतियों आदि को सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है। लेखकों ने जहां इन सांस्कृतिक सूत्रों का परिचय दिया है वहीं पर अपनी अन्वेषण दृष्टि से परंपराओं के इतिहास, मान्यताओं के कारणों, अन्य देशों के सांस्कृतिक प्रभाव का उल्लेख भी किया है और अनेक निष्कर्ष भी निकाले है।

यात्रा–साहित्य में चरित्र–चित्रण करने वाले प्रमुख लेखक – रामवृक्ष बेनीपुरी, भवतशरण उपाध्याय, बलराज साहनी कमलेश्वर, बनारसीदास चतुर्वेदी, मोहन राकेश, प्रभाकर द्विवेदी, हिमांशु जोशी, रामदरश मिश्र, कुमुद, इंदिरा मिश्र और प्रदीप पंत आदि है। यात्रा–साहित्य में विविधता पूर्ण चरित्रों का चित्रण मिलता है और लेखकों ने अनेक शैलियों के माध्यम से इन चरित्रों को प्रकट किया है। यद्यपि यात्रा–साहित्य के चरित्रों को अन्य साहित्यिक विधाओं की कसौटी पर नहीं परखा जा सकता फिर भी ये चरित्र यात्रा–स्थलों के परिवेश को समझने, यात्रा–कथा को ऊर्जा प्रदान करने, लेखक के व्यक्तित्व एंव साहित्यिक कौशल को समझने में सहायक हुए हैं।

यात्रा–साहित्य की भाषा–शैली में विविधतापूर्ण विशेषताओं का मिश्रण मिलता है। यात्रा–साहित्य में बाह्य रूप से – निबंध, वर्णनात्मक, संस्मरण, डायरी, पत्र, काव्यात्मक, औपन्यासिक, आत्मकथा एंव रेखाचित्र आदि व आंतरिक रूप से – भावुकतापूर्ण, संवेदनात्मक, दार्शनिक, लाक्षणिक, आलंकारिक, चित्रात्मक एंव काल्पनिक आदि शैलियों का प्रयोग मिलता है। यात्रा–साहित्य भाषा सरल, सहज, स्वाभाविक एंव रूचि पूर्ण है। लेखकों की विचार प्रधानता और संस्कृत निष्ठ शब्दावली के कारण कही–कहीं पर भाषा में क्लिष्टता एंव गंभीरता के दर्शन भी होते है।